

## कलंक से समाधान तक

\*\*\*

### मिजोरम में एचआईवी के स्व-परीक्षण पर जोर

\*\*\*

25 फरवरी, 2025

भारत के पूर्वोत्तर पर्वतीय क्षेत्र में बसा मिजोरम अपने सुंदर परिदृश्यों और निकटता से जुड़े समुदायों के लिए जाना जाता है। मिजोरम एचआईवी/एड्स के खिलाफ अपनी लड़ाई के लिए भी प्रेरणा बन रहा है। मिजोरम भारत में एचआईवी के सबसे अधिक प्रसार वाला राज्य होने की समस्या से जूझ रहा है, जिसमें प्रभावित आबादी का एक बड़ा हिस्सा युवा वयस्क हैं। एचआईवी परीक्षण के पारंपरिक तरीके कलंक और तार्किक चुनौतियों के कारण अपर्याप्त साबित हुए हैं, जिसमें अक्सर ऐसे लोगों को स्वास्थ्य सेवा केंद्रों पर जाने की आवश्यकता होती है। इस पृष्ठभूमि के खिलाफ, एचआईवी स्व-परीक्षण (एचआईवीएसटी) की शुरुआत एक क्रांतिकारी दृष्टिकोण के रूप में उभरी है, जो निदान का एक अधिक निजी, सुविधाजनक और प्रभावी साधन प्रदान करता है।



मिजोरम में लगातार एचआईवी संक्रमण की खतरनाक दर दर्ज की गई है, जो राष्ट्रीय औसत से कहीं ज्यादा है। असुरक्षित यौन संबंध और नसों में नशीली दवाओं के इस्तेमाल के रूप में संक्रमण के प्राथमिक तरीकों की पहचान की गई है। जागरूकता अभियानों के बावजूद, कई लोग जांच करवाने में हिचकिचाते हैं, जिससे निदान में देरी होती है और संक्रमण का जोखिम बढ़

जाता है। इसलिए, एक नया दृष्टिकोण आवश्यक था, जो लोगों को कलंक या तार्किक चुनौतियों के डर के बिना अपने स्वास्थ्य पर नियंत्रण रखने के लिए सशक्त बना सके। यहीं पर एचआईवी स्व-परीक्षण एक गेम-चेंजर साबित हुआ है।

एचआईवी स्व-परीक्षण किसी व्यक्ति को आसानी से इस्तेमाल होने वाली किट का उपयोग करके अपने घरों की गोपनीयता में अपना परीक्षण करने की सुविधा प्रदान करता है। इन किटों में आम तौर पर लार या रक्त का नमूना एकत्र करना और मिनटों के भीतर परिणाम प्राप्त करना शामिल होता है। इस दृष्टिकोण को कई देशों में सफलतापूर्वक लागू किया गया है, और मिजोरम में इसकी शुरुआत ने एचआईवी के खिलाफ लड़ाई में उम्मीद जगाई है। एचआईवी स्व-परीक्षण के लाभों में कलंक से निपटना और लोगों को सकारात्मक परिणाम का पता चलने पर स्वास्थ्य सेवा से जुड़े पेशेवर से मिलकर अपने स्वास्थ्य के प्रबंधन में सकारात्मक कदम उठाने के लिए सशक्त बनाना शामिल है। इसके अतिरिक्त, एचआईवीएसटी लोगों के घरों तक परीक्षण लाकर तार्किकता संबंधी कमी को दूर करता है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि सबसे दूरस्थ स्थानों में रहने वाले लोग भी लंबी दूरी की यात्रा किए बिना खुद का परीक्षण कर सकते हैं।

मिजोरम में एचआईवी स्व-परीक्षण की सफलता ऐसी ही चुनौतियों का सामना कर रहे अन्य राज्यों के लिए एक मूल्यवान मार्गदर्शन प्रस्तुत करती है। यदि सही तरीके से इसका विस्तार किया जाए, तो एचआईवीएसटी पूरे भारत में एचआईवी की रोकथाम संबंधी रणनीतियों को बदल सकता है। विशेष रूप से यह अत्यधिक संक्रमण दर और सीमित स्वास्थ्य सेवा की पहुंच वाले क्षेत्रों में उपयोगी साबित हो रहा है। स्थानीय मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने और लक्षित संदेशों के माध्यम से कलंक को खत्म करने वाले अनुकूलित जन जागरूकता

अभियान प्रभावी हो सकते हैं। परामर्श और क्रमबद्ध सहायता के लिए एचआईवीएसटी को मोबाइल ऐप और टेलीहेल्थ सेवाओं के साथ जोड़कर डिजिटल स्वास्थ्य समाधानों का लाभ उठाने से पहुंच में सुधार हो सकता है। सार्वजनिक-निजी भागीदारी निजी स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं और गैर-सरकारी संगठनों के साथ सहयोग करके पहुंच और उपलब्धता का विस्तार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

भारत सरकार विभिन्न पहलों के माध्यम से एचआईवी/एड्स महामारी से निपटने के लिए पूरी सक्रियता से काम कर रही है। सबसे महत्वपूर्ण प्रयासों में से एक राष्ट्रीय एड्स और एसटीडी नियंत्रण कार्यक्रम (एनएसीपी) चरण-V है, जो 15,471.94 करोड़ रुपये के परिव्यय के साथ सरकार द्वारा पूरी तरह से वित्तपोषित एक केंद्रीय क्षेत्र की योजना है। यह कार्यक्रम वित्तीय वर्ष 2025-26 तक राष्ट्रीय एड्स और एसटीडी प्रतिक्रिया का विस्तार करता है और संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) 3.3 के साथ तालमेल रखता है, जिसका उद्देश्य 2030 तक सार्वजनिक स्वास्थ्य खतरे के रूप में एचआईवी/एड्स महामारी को समाप्त करना है।

एचआईवी/एड्स की रोकथाम और नियंत्रण अधिनियम (2017), जांच और उपचार नीति, यूनिवर्सल वायरल लोड टेस्टिंग, मिशन संपर्क और समुदाय-आधारित जांच जैसी पिछली पहलों के आधार पर एनएसीपी चरण-V प्रगति को सशक्त करने और आगे बढ़ाने के लिए नई रणनीतियों की पेशकश करता है। इस चरण का एक प्रमुख घटक संपूर्ण सुरक्षा केंद्र (एसएसके) है, जो एचआईवी और यौन संचारित संक्रमणों (एसटीआई) के जोखिम वाले व्यक्तियों के लिए एकल-खिड़की सेवा केंद्र के रूप में कार्य करता है। ये केंद्र ग्राहकों की जरूरतों के अनुरूप सेवाओं का एक समग्र सेट प्रदान करते हैं, जो स्वास्थ्य सेवा प्रणाली के भीतर और बाहर मजबूत संबंध और रेफरल सुविधा सुनिश्चित

करते हैं। एक व्यापक रोकथाम-जांच-उपचार-देखभाल संबंधी निरंतरता के माध्यम से सरकार यह सुनिश्चित कर रही है कि एचआईवी का पता लगाने और उपचार देश के हर कोने तक पहुंचे, जिसमें मिजोरम जैसे दूरस्थ राज्य भी शामिल हैं।



इसके अलावा, मिजोरम में, मिजोरम राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी (एमएसएसीएस) के पास एचआईवी/एड्स की रोकथाम और जांच के लिए कई योजनाएं हैं, जिनमें मोबाइल जांच केंद्र, परामर्श और उपचार शामिल हैं। लोगों में, खास तौर पर जेलों में, एचआईवी संक्रमण से निपटने में एमएसएसीएस और मिजोरम राज्य की सरकार के प्रयासों को संयुक्त राष्ट्र ड्रग्स और अपराध कार्यालय द्वारा स्वीकार किया गया है।

एचआईवी सेल्फ-टेस्टिंग मिजोरम में एचआईवी/एड्स के खिलाफ लड़ाई में एक क्रांतिकारी उपकरण साबित हो रहा है। कलंक और पहुंच की दोहरी चुनौतियों का समाधान करके, एचआईवीएसटी व्यक्तियों को अपने स्वास्थ्य की जिम्मेदारी लेने, शीघ्र निदान को बढ़ावा देने और अंततः संक्रमण दर को कम करने में सक्षम बनाता है। चूंकि मिजोरम स्व-परीक्षण को लागू करने में अग्रणी बना हुआ है, इसलिए इसकी सफलता की कहानी सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए अभिनव, समुदाय-संचालित दृष्टिकोण अपनाने की चाह रखने वाले अन्य राज्यों और क्षेत्रों के लिए प्रेरणा का काम करती है। सही नीतियों, समर्थन और जागरूकता के साथ, एचआईवी सेल्फ-टेस्टिंग एचआईवी/एड्स के खिलाफ लड़ाई में एक राष्ट्रीय रणनीति बन सकती है, जो भारत के सबसे गंभीर स्वास्थ्य संकटों में से एक में बदलाव ला सकती है।

## संदर्भ

<https://pmc.ncbi.nlm.nih.gov/articles/PMC11835815/>

<https://naco.gov.in/national-aids-control-programme-v>

<https://www.unodc.org/southasia/frontpage/2010/november/mobile-ictc-in-mizoram-prison.html>

<https://www.naco.gov.in/sites/default/files/NACO%20Newsletter%20अप्रैल%20%20जून%202023%20%28English%29.pdf>

<https://www.incredibleindia.gov.in/>

\*\*\*

एमजी/केसी/एसकेएस/एमबी